पवित्रता, त्याग, तपस्या और सेवा के चतुर्मुखी प्रजापिता ब्रह्मा

18 जनवरी को एक बार फिर हम पिताश्री, प्रजापिता ब्रह्मा के बहुमुखी दिव्य जीवन का पुनः स्मरण कर देखेंगे कि उनके प्रेरणादायक जीवन से प्रभावित होकर हमें क्या दिव्य उपलब्धियां हुई। परंतु जब हम उनके जीवन से संबंधित संस्मरणों का मन में प्रादुर्भाव करते हैं तो देखते हैं कि इतनी सारी विशेषताएं इकट्ठी हो, आकर प्रगट होती हैं कि ये सोच पाना भी मुश्किल हो जाता है कि इनमें से किसको प्राथमिकता देकर हम उस पर विचार करें। अतः विशेषताओं के क्रम को एक ओर रखकर हम इस लघु संपादकीय में केवल एक दो ही ऐसे बिन्दुओं पर विचार करेंगे जिनसे उनके व्यक्तित्व, पुरुषार्थ या दिव्यता के कुछ पहलुओं का हमें सही महत्त्व ज्ञात होता है।

एक बात तो ये है कि जो लोग उनके निकट संपर्क में आए और जिन्होंने निष्पक्ष भाव से उनके मुखारविंद द्वारा ईश्वरीय ज्ञान का थोड़ा भी श्रवण कर उस पर मनन किया उनके जीवन में आशातीत परिवर्तन हुआ। जो पहले ये सोचे बैठे हैं कि वे पवित्र बन ही नहीं सकते या अपनी किन्हीं आदतों और व्यसनों को छोड़ ही नहीं सकते या कि वे परमात्मा की अनुभूति कम से कम इस जीवन में तो कर ही नहीं सकते, उनके जीवन में आध्यात्मिक परिवर्तन का एक ज्वार-भाटा आ गया। न केवल उन्होंने अपने जीवन में पवित्रता का वरदान प्राप्त किया और ईश्वरानुभूति तथा आनंद का रसास्वादन किया बल्कि आगे चलकर वे दूसरों के जीवन में भी ऐसा परिवर्तन लाने के योग्य बने। कुछेक वृतांत तो ऐसे हुए कि कुटुम्ब परिवार के सभी सदस्यों में एक अनुपम परिवर्तन आया और उन्हें ऐसा अतीन्द्रिय सुख मिला तथा वे आनंद से ऐसे विभोर हो गए कि समस्त परिवार ने ही अपना जीवन ईश्वरीय सेवा में जुटा दिया। उन्होंने तन-मन-धन सभी को विश्व सेवा के लिए प्रभु समर्पण कर दिया। संसार भर के धार्मिक, राजनीतिक या सामाजिक इतिहास में ऐसा उदाहरण ढूंढ़ने से भी नहीं मिलेगा कि एक नहीं बल्कि कई परिवारों ने अपना सबकुछ समेटकर अपना सारा जीवन त्याग और तपस्या से व्यतीत करते हुए जन-जन को ईश्वरीय सुख की प्राप्ति के योग्य बनाने के कार्य में लगा दिया हो और स्वयं अपने देह के नातों से अतीत होकर एकसाथ रहे हों। भारत की स्वतंत्रता के संग्राम में कुछेक व्यक्तियों ने अपना सब कुछ देश की स्वतंत्रता के लिए लगा दिया परंतु केवल दो चार परिवारों को छोड़कर कुछ ऐसे परिवारों का उदाहरण नहीं है कि जिनके सभी सदस्य समर्पित हुए हों और इस पर भी ऐसा परिवार तो एक भी नहीं होगा कि जिसके सदस्य देहातीत दृष्टि से एक साथ कार्यरत रहे हों तथा जिन्होंने चर्म चक्षुओं से दिखाई न देने वाले परमात्मा के प्रति स्वयं को समर्पित किया हो, नैतिक मूल्यों के विकास के लिए और जन-जन को प्रभु संदेश देने के लिए अपने जीवन की भेंट की हो।

ब्र.कु. गंगाधर

अन्यश्च, भारत की स्वतंत्रता संग्राम में तो केवल कुछ एक महिलाओं ने भाग लिया था। अधिक संख्या में तो गांधी के ही व्यक्तित्व का ये प्रभाव था कि कुछ परिवार, कुछ महिलाएं और इतने सारे लोग उसमें जी जान लगाकर कार्य कर रहे थे। परंतु प्रजापिता ब्रह्मा के व्यक्तित्व की तो बात ही निराली है। उन्होंने विशेषतया मातृ-शक्ति को जागृत किया, त्याग और तपस्या पर बल दिया, सेवा के संस्कार को उजागर किया और इन चर्म-चक्षुओं के सामने अदृश्य परंतु हर मन में छिपे हुए काम, क्रोध आदि शत्रुओं से संग्राम करने के लिए रूहानी वीरों को तैयार किया। ऐसा शक्ति दल किसी ने तैयार किया हो और मनोविकारों का बिस्तरा गोल करने की चुनौती किसी ने दी हो तो कोई बताए? भारत से अंग्रेजों को निकालने के लिए 'भारत छोड़ो' नामक घोषणा की गई और आंदोलन छेड़ा गया परंतु मनोविकारों को 'विश्व छोड़ो' के उद्देश्य वाला एलान किसी ने नहीं किया। निःसंदेह, ब्रिटिश साम्राज्य भी शक्तिशाली था परंतु माया का साम्राज्य तो अत्यंत शक्तिशाली है- ऐसा कि सभी उसकी सेना में हैं। उस पर विजय पाने की दुदुम्भी तो प्रजापिता ब्रह्मा ही ने बजाई। यों संसार में अनेक धर्म स्थापक हुए हैं जिनके व्यक्तित्व से काफी लोग प्रभावित हुए परंतु कौन है जिसने योजनाबद्ध रीति से कन्याओं-माताओं को अग्रिम पंक्ति में रखकर माया की मजबूत बेड़ियों को तोड़ने का व्रत लिया हो और स्थाई और सुचारू रूप से इस कार्य को आगे बढ़ाया हो?

विश्व के इतिहास में कई ऐसे भी धर्म प्रचारक हुए हैं जिन्होंने या जिनके शिष्यों ने देश की सीमाओं को पार करके अन्य देशों में अपने मन्तव्यों का प्रचार किया परंतु उनके इस प्रचार से कितने ऐसे लोग तैयार हुए जिन्होंने दृढ़तापूर्वक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन, आहार, विहार, व्यवहार तथा आचार, संग और अध्ययन की पवित्रता का पालन किया और जिन्होंने योगयुक्त होकर ईश्वरानुभूति की तथा माया को चुनौती दी कि वह संसार छोड़ दे। यह पिताश्री के त्याग और तपस्या एवं पवित्रता तथा आत्मनिष्ठा ही का फल था कि अनेकानेक परिवारों और नर-नारियों ने अपना जीवन ईश्वरीय सेवा में लगा दिया। जीवन एक बहुत बड़ी और मूल्यवान निधि है। अतः समस्त जीवन को एक ही लक्ष्य के प्रति लगा देना और स्वेच्छा से स्वयं को अनेक व्रतों में संकल्पबद्ध करके उसी में जीवन लगा देना कोई मासी का घर नहीं है। यह तभी संभव है जब जीवन में नित्य प्रगति और प्रेरणा का स्रोत था। वह पवित्रता, त्याग, तपस्या, सेवा का चतुर्मुखी मूर्त रूप था। स्वयं को तथा जगत को बदल देने का दृढ़ संकल्प लिया। ऐसे हम सबके अति स्नेही, अति प्यारे, ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त दिवस पर, उन जैसा बनने का दृढ़ संकल्प लेकर प्यार का सबूत दें।

परमात्मा पर सम्पूर्ण निश्चय का सबूत दिया ब्रह्मा बाबा ने...

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

बाबा की सबसे पहली विशेषता रही संपूर्ण निश्चय। ब्रह्मा बाबा को शिव बाबा ने टच किया और ब्रह्मा बाबा ने उस संकल्प में थोड़ा-सा भी संशय नहीं लाया। उन्होंने कभी यह नहीं सोचा क्या होगा, कैसे होगा, मैं सब-कुछ छोड़ तो दूँ लेकिन आगे स्थापना कर सकूँगा या नहीं कर सकूँगा? नयी बात थी ना! दुनिया में द्वापर से लेकर अभी कलियुग तक जो बात किसी ने नहीं कही थी कि प्रवृत्ति में रहकर भी आप निर्विकारी रह सकते हैं, पवित्र रह सकते हैं। यह बात किसी ने कही है? अभी तक भी इतने साधु, संत, महात्मा, महामण्डलेश्वर आदि जो भी हैं, वे भी विश्वास नहीं करते कि आग और कपास साथ में हों और आग नहीं लगे, यह हो ही नहीं सकता- वे ये शब्द बोलते हैं लेकिन हम क्या बोलते हैं? आप सभी भी प्रवृत्ति में रहते हैं ना! आपका दिल क्या कहता है? आग और कपास होते भी अपवित्रता की आग नहीं लगती है ना! नयी बात है ना यह! झगड़ा जब शुरू हुआ, वो किससे हुआ? इससे ही ना!

मुझे याद है, शुरू-शुरू में सिन्ध-हैदराबाद में बहुत हंगामा हुआ। बाबा को पंचायत में बुलाया गया। पंचों ने बाबा से कहा कि आप इन माताओं और कन्याओं से कहो कि पवित्र न रहें। हमारे आगे आप वायदा करो। बाबा ने कहा कि मैं यह वायदा नहीं कर सकता और यह बात उनसे कह भी नहीं सकता क्योंकि शिवबाबा ने मुझे यही आज्ञा दी है कि तुमको पवित्र बनकर, पवित्र दुनिया की स्थापना करनी है। इसका फाउण्डेशन ही यह है और मैं कहूँ कि पवित्र नहीं बनो तो पवित्र दुनिया स्थापन होगी कैसे? उन्होंने कहा कि इन माताओं-कन्याओं को मार पड़ेगी, बंधन पड़ेंगे,आपके खिलाफ विरोध होगा। बाबा ने कहा कि मेरे को शिवबाबा का डायरेक्शन है, मैं उसको टाल नहीं सकता। इतनी हिम्मत चाहिए ना!

बाबा को ज़रा भी संशय नहीं आया। बाबा इतना बड़ा जवाहरी था। कभी सोचा कि मेरे परिवार का क्या होगा? मेरी प्रतिष्ठा का क्या होगा? वे भूखे तो नहीं मरेंगे! ऐसा सोचा? नहीं। सबकुछ समर्पण कर दिया। उनमें यही लगन थी कि बाबा जो कहता है मुझे वैसे ही करना है। इसको कहा जाता है निश्चय। आपको पता है, आपके सामने आदर्श हैं कि ब्रह्माकुमार-कुमारी बनेंगे तो क्या-क्या करना पड़ेगा, कैसे करना पड़ेगा। आपके आगे उनका एग्ज़ाम्पल है ना, जिन्होंने आपसे पहले ही पवित्र गृहस्थ जीवन अपनाया है। उनको देखकर आपने निर्णय लिया कि हमें भी ऐसे रहना है, ऐसे करना है। ब्रह्मा बाबा के आगे कोई दृष्टांत, एग्जाम्पल नहीं था। नयी बात थी। इतनी नयी बात कि लोग असम्भव मानते थे। उस असम्भव को बाबा ने सम्भव बनाकर दिखाया। संकल्प मात्र में भी, स्वप्न मात्र में भी बाबा को संशय नहीं आया। इसको कहते हैं, बाप समान। बाप समान बनना माना साक्षात् बाबा बनना। तभी हम साक्षात्कार मूर्त बन सकते हैं।

ब्रह्मा बाबा को हमने कभी साधारण रूप में नहीं देखा

राजयोगिनी दादी जानकी जी

आरम्भ से ही मुझे बाबा के मस्तक से लाइट-माइट का साक्षात्कार होता ही रहा। बाबा का त्याग भी प्रैक्टिकल था, तपस्या में सदा तत्पर थे और सेवा में हमने उन्हें अथक होकर सभी को सुख देते देखा। हमने बाबा को कभी भी सहज साधारण मूड में नहीं देखा। अव्यक्त होने के तीन वर्ष पहले से ही बाबा एकदम न्यारे बन गये थे। कोई भी बात जैसे कि सुनते हुए भी नहीं सुनते थे। निमित्त बनकर यज्ञ कारोबार चलाते थे। कराची में बाबा ने देह के सम्बन्ध तोड़कर एक परमात्मा से कैसे जोड़ें- यह अभ्यास किया और कराया। योग कराने के बाद हम बाबा से पूछते थे- बाबा आप कहाँ थे? तो बाबा कहते थे कि "मैं तुम बच्चों को ही दृष्टि नहीं दे रहा था, सारे विश्व की आत्माओं को दृष्टि दे रहा था। मैं तो सारे विश्व का पिता हूँ।" कभी बाबा कहते थे कि चलो बच्चे, वाणी से परे, निर्वाणधाम, वहाँ बैठते हैं जहाँ सब आत्माएं रहती हैं। ऐसे बाबा विभिन्न बातों का अभ्यास करते और करवाते थे। अव्यक्त होने के बाद अब भी बाबा बेहद विश्व सेवा कर रहे हैं।

साकार में बाबा जब थे तो तब कईयों को घर बैठे उनका साक्षात्कार होता था। ऐसे अव्यक्त होने के बाद कई विदेशी भाई-बहनों को ब्रह्मा बाबा का और मधुबन का साक्षात्कार हुआ है। हरेक को लगता है कि यह हमारा बाप है, ऐसे नहीं लगता कि ये केवल हिन्दुओं का ही है। सबको अपनेपन की भासना आती है। उनको लगता है कि यह हमारा परमात्मा से सम्बन्ध जुड़ाने वाला बाप है। वे ज्ञान तो सुनते हैं लेकिन ब्रह्मा बाबा को देखते ही कहते हैं- मेडिटेशन समझ में आ गया। हम सभी जनवरी अव्यक्त मास में बाबा ने जो शिक्षाएं दी हैं- विचार सागर मंथन करें, ज्ञान की गहराई में जायें, जिससे बुद्धि को परचिंतन करने की फुर्सत नहीं मिले। बीती बातों का चिंतन नहीं, फालतू बातें सुनना नहीं, ज़रूरत की बातें सुनाई पड़े।

वैसे तो मैं बाबा के पास पीछे आई हूँ, लेकिन समर्पित होने के पहले जब घर में रहती थी, तब भी मेरे सामने बाबा फरिश्ता रूप में घूमते थे। गीता पढ़ते समय भी अनुभव करती थी कि बाबा मेरे सामने खड़े हैं और मुझे बुला रहे हैं। भक्ति में मैंने बूढ़े ब्राह्मण में सत्य नारायण स्वामी को देखा था तो जब मैं बाबा के पास आई तो सत्य नारायण स्वामी जैसे ही भासना आई।

मुझे सदा अव्यक्त स्थिति का गुप्त नशा और निशाना रहता था। मैं तीनों बाप- साकारी, आकारी व निराकारी को सामने खड़े अनुभव करती हूँ। साकार को फॉलो करना है। आकारी ब्रह्मा बाबा को देखती हूँ कि कैसे इतनी बड़ी ज़िम्मेवारी सम्भालते हुए संपूर्ण बने, निराकारी को सदा नज़रों के सामने रखती हूँ। जब भी समय मिलता है विदेही स्थिति का अभ्यास करती हूँ।

मैंने बाबा को कभी साधारण मनुष्य सदृश्य नहीं देखा। पाँच तत्वों के शरीरधारी एकदम हल्के-फुल्के फरिश्ता अनुभव होते थे। उनका बोल-चाल, उठना-बैठना अनोखा ही था। उनकी गंभीर मुद्रा से लगता था कि वे प्रभु-प्रेम में डूबे हुए हैं। उनके नैन से और मुख से एक अपूर्व तेजस्विता छलकती थी। वे जीवनमुक्त अवस्था में प्रत्येक कार्य दिव्यता के साथ करते थे। सत्यता, पवित्रता और दिव्यता के अवतार दिखाई देते थे।

बाबा को हमने सदा ही उपराम स्थिति में देखा

मीठे बाबा हमें सदैव बेहद सेवाओं में कभी कहां, कभी कहाँ भेजते ही रहे। अनेक सेन्टर खोलने के निमित्त बनाया। कभी दिल्ली तो कभी मुम्बई, कभी कोलकाता, तो कभी बिहार भेजते थे। विदेश में जापान आदि की भी अचानक यात्रा करायी। सदैव बाबा का यह वरदान था कि बच्ची, हर समय एवररेडी रहना। बाबा का एक इशारा आता था कि तुम्हें यहाँ से वहाँ जाना है। मैं कहती थी, जी बाबा। बाबा रोज़ बेहद सेवा की कुछ न कुछ प्रेरणा भी देते थे और आज्ञा भी करते थे। अठारह जनवरी से पहले मैं गामदेवी मुम्बई में रहती थी। थोड़े दिन पहले ही मुम्बई से बाबा के पास पार्टी लेकर आयी थी। पार्टी लेकर चली गयी। फिर और एक छोटी पार्टी लेकर दो दिन के बाद मधुबन आयी। उस समय दीदी इलाहाबाद के कुम्भ मेले में गयी थी। चौदह जनवरी मकर सक्रांति पर वहाँ मेला लगता है। उस समय विशेष अर्धकुंभ मेला था। जब मैं यहाँ(मधुबन) आयी तो बाबा ने कहा, बच्ची, तुम अभी आयी हो, दो-चार दिन रूक जाना। बाबा कभी भी मुझे दो दिन से ज़्यादा नहीं रहने देते थे। कभी मैं कहती थी, बाबा, मैं चार-पाँच दिन रहूँगी, तो बाबा कहते थे, क्यों, कोई सेवा नहीं है क्या? क्यों यहाँ रहना है? नहीं, सेवा पर चले जाओ, बादल भरके जाओ और वहाँ बरसो। जब बाबा ने खुद कहा कि दो-चार दिन रह जाओ तो मैंने कहा, जी बाबा। मैं आयी थी 14 जनवरी को और

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

जाना था 16 जनवरी को। बाबा ने कहा, बच्ची,पार्टी को जाने दो, दीदी भी नहीं है, थोड़े दिन रह जाओ। उस समय मधुबन की सारी कारोबार दीदी ही सम्भालती थी। बाबा हर बात में हम बच्चों को अनुभवी बनाते थे।

अठारह जनवरी की सुबह बाबा ने मुरली नहीं चलायी। सवेरे से ही बाबा का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। यज्ञ के इतिहास में बाबा के तपस्वी जीवन में केवल यह एक ही दिन था जब बाबा ने प्रातः की मुरली नहीं चलायी थी परन्तु वे उस दिन सर्वोच्च स्थिति में स्थित थे। जब हमने डॉक्टर को बुलाने के लिए कहा तो बाबा ने उसी मस्ती में कहा था कि "बच्ची, डॉक्टर क्या करेगा, मैं तो सुप्रीम सर्जन से बातें कर रहा हूँ।" उस दिन बाबा ने कहा, लाओ, आज बच्चों को पत्र लिखूँ। बाबा के हाथ में भी वह लाल कलम, जिसके सुंदर अक्षर सभी के दिलों को खींच लेते थे। बाबा ने सभी पत्रों के उत्तर दिये। बाबा ने लिखा था, "बच्चे, सदा एक मत होकर चलना है, एक की याद में रहना और सदा शक्तियों को आगे रखना है तब ही सेवा में सफलता होगी।" ये अंतिम पत्र कई बच्चों ने अपने दिल में छुपा कर रख लिये थे। कितनी सौभाग्यशाली थीं वे आत्माएं जिन्हें स्वयं सृष्टि रचयिता ब्रह्मा ने अपने हस्तों से पत्र लिखे थे। दिन में बाबा अंगुली पकड़कर मुझे मधुबन का आँगन घुमाते रहे। उस समय यह ट्रेनिंग सेंटर बन रहा था, बाबा ने दिन का भोजन कर विश्राम भी किया। शाम के समय कोई पार्टी आयी थी, बाबा उनसे भी मिले। फिर उस दिन बाबा ने कहा, आज रात का भोजन थोड़ा जल्दी कर देते हैं। उस दिन बाबा ने रात 7:30 पर भोजन किया। वैसे तो रोज़ 8:30 बजे भोजन करते थे। भोजन के बाद बाबा रात्रि क्लास में भी आये। क्लास में बाबा ने शिक्षाओं भरी मधुर मुरली सुनायी।

अच्छा बच्चे विदाई

उस दिन बाबा आठ बजे ही क्लास में आये और साकार रूप के वे अंतिम महावाक्य तो दिल में समाने जैसे हैं। बाबा ने कहा था - "बच्चे, सिमर सिमर सुख पाओ, कलह-कलेश मिटें सब तन के, जीवनमुक्ति पाओ।" "बच्चे, निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोई। तुम्हें किसी की भी निन्दा नहीं करनी और किसी से वैर विरोध भी नहीं रखना।"

इस प्रकार याद की यात्रा पर बल देते हुए यज्ञपिता बाबा खड़े होकर गेट की ओर चले और फिर गेट पर रूक गये और बोले, "बच्चे, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी बनो। जैसे बेहद का बाप सम्पूर्ण व सदा निर्विकारी है, सदा निराकार है, निरहंकारी है वैसे ही बच्चों को भी बनना है।" फिर उस अंतिम घड़ी के पूर्व बाबा के मुख से ये शब्द निकले, "अच्छा बच्चे, विदाई।"